चार दिन की बरसात में सारा सरकारी तंत्र फेल

शहर के तीनों अंडरपास डूबे, सड़कें हुई जाम

फरीदाबाद (म.मो.) शुक्रवार दिनांक 7 अक्टूबर को शुरू हुई बरसात में, खट्टर सरकार द्वारा शहरवासियों पर लादी गई, नगर निगम, 'हूडा', स्मार्ट सिटी कंपनी लिमिटेड व एफएमडीए जैसी एजेंसियां पूरी तरह से फ्लॉप-शो साबित हुई हैं। पहले तो जनता का लहू पीने के लिये नगर निगम व 'हूडा' ही थे परन्तु इनसे भाजपा सरकार की तसल्ली नहीं हुई तो स्मार्ट सिटी कंपनी तथा एफएमडीए भी शहरवासियों की छाती पर मूंग दलने को बैठा दी।

विकास के नाम पर जगह-जगह शहर को खोद कर डाल रखा है। एफएमडीए वाले खुदाई करते समय किसी से भी, कहीं से भी यह जानने तक का प्रयास नहीं करते कि सीवर लाइन कहां है और पेय जल की लाइन कहां है। इसी तरह से स्मार्ट सिटी कंपनी भी कोई काम शुरू करने से पहले यह जानने का कोई प्रयास नहीं करते कि उनसे पहले एमसीएफ़ एवं 'हूडा' ने कहां क्या कर रखा है? बस आंख मिच कर खुदाइ व तोड़-फोड़ करके पेमेंट वसूली का जुगाड़ बनाये जा रहे हैं।

हर बरसात की तरह इस बार भी शहर के तीनों अंडरपास पानी से इस कदर डूब गये मानो जैसे कि स्वीमिंग पूल हों। पहले तो एक-दो दिन में इनका पानी निकाल कर इन्हें चालू कर दिया जाता था, परन्तु इस बार तो चार दिन से भी अधिक समय ये तीनों अंडरपास पूरी तरह से बंद रहे। कहने की जरूरत नहीं कि शहर के बीचों-बीच बने तीन रेलवे ओवरब्रिज तथा तीन रेलवे अंडरपास शहर को जोड़ने के लिये अति महत्वपूर्ण हैं। तीन अंडरपास बंद होने के चलते यातायात का सारा भार तीन रेलवे ओवरब्रिजों पर पड़ना ही था। जाहिर है ऐसे में ट्रैफीक जाम की स्थिति को रोका नहीं जा सकता था। सड़कों पर बने गड्ढों व उनमें भरे पानी ने जाम की स्थिति को और भी विकट बना दिया।

अंडरपासों को जलभराव से बचाने की बजाय प्रशासन को इन पर पुलिस का पहरा बैठाना आसान प्रतीत हुआ। लिहाजा तीनों अंडरपासों के दोनों ओर पुलिस तैनात कर दी गई ताकि जाने अनजाने कोई इनमें फंस कर प्रशासन के लिये मुसीबत खड़ी न कर दे। विदित है कि 10 दिन पूर्व ही ग्रीन फील्ड वाले अंडरपास में मानव रचना स्कूल की एक बस फंस गई थी जिसमें से बड़ी मुश्किल से बच्चों को निकाला गया था। इससे पहले भी ऐसी कई दुर्घटनायें हो चुकी थी। सरकारी एजेंसियों को जल निकासी की अपेक्षा पुलिस का पहरा लगाना अधिक सुविधाजनक लगा।

इन अंडरपासों के बंद होने से वाहनचालक तो जैसे-तैसे कई किलोमीटर के चक्कर काट कर निकलते रहे, लेकिन पैदल पथिक जान जोखिम में डालकर रेल पटरियां पार करते रहे। मेवला महाराजपुर निवासी उपेन्द्र तिवारी अंडरपास बंद होने के चलते बडखल रेलवे ओवरब्रिज के जरिये घर जाते समय 21 सी की टूटी-फूटी सड़क पर अपनी प्राणों की आहूती दे बैठा। लेकिन शासन-प्रशासन को लेस मात्र भी शर्म नहीं।

ट्रैफिक पुलिस खड्डे भरने में जुटी

सड़के बनाने व मुरम्मत करने के नाम पर करोड़ों, अरबों डकारने वाले तमाम महकमे जब संकट की इस घड़ी में बड़े आराम से मुंह ढक कर सो रहे थे, उस वक्त ट्रैफिक पुलिस वाले पुलिसिंग का काम छोड़ कर किसी भी तरह ट्रैफिक को चलाये रखने में जुटे रहे। ये लोग कहीं पानी में फंसी गाड़ियों को धक्का लगा कर निकालने का प्रयास कर रहे थे तो कहीं सड़कों में बने गड्ढों को भरने में जुटे थे। ये गड्ढे कोई आज या कल में नहीं बने थे, ये तो स्थाइ रूप से शहर की सड़कों में बने ही रहते हैं। हाईवे पर बाटा मोड़, अजरोंदा मोड़ जैसे महत्वपूर्ण स्थानों से जल निकासी के लिये सकर मशीनों को ठेके जरूर दे दिये जाते हैं जिससे सम्बन्धित अधिकारियों को ठीक-ठाक कमीशन मिल जाता है।

टूटी सड़क के गड्ढे में फंस कर मरा बाइकर, उल्टे प्रदर्शनकारियों पर मुकदमा, गिरफ्तारी

फ़रीदाबाद (म.मो.) नगर निगम, एफएमडीए, स्मार्ट सिटी कंपनी, 'हूडा' जैसी चार संस्थाओं को नागरिकों की 'सेवा' में खट्टर सरकार ने लगा रखा है। इनके अलावा कुछ काम पीडब्लूडी तथा एचएसआईआईडीसी के जिम्मे भी हैं। इस सबके बावजूद शहर की जो दुर्दशा आज देखने को मिल रही है, पहले कभी नहीं देखी थी। सड़कों पर अंधेरा व गड्ढों में पानी यानी राहगीरों की मौत का पूरा इंतजाम, कोई बच सके तो बच ले, सरकार की कोई जिम्मेवारी नहीं है। दिनांक आठ अक्टूबर रात करीब आठ-नौ बजे उपेन्द्र तिवारी अपने काम से लौट कर मेवला महाराजपुर स्थित अपने किराये के मकान की ओर जा रहा था। यदि मेवला महाराजपुर के अंडरपास में पानी न भरा होता तो वह मरने के लिये घटनास्थल पर न आया होता।

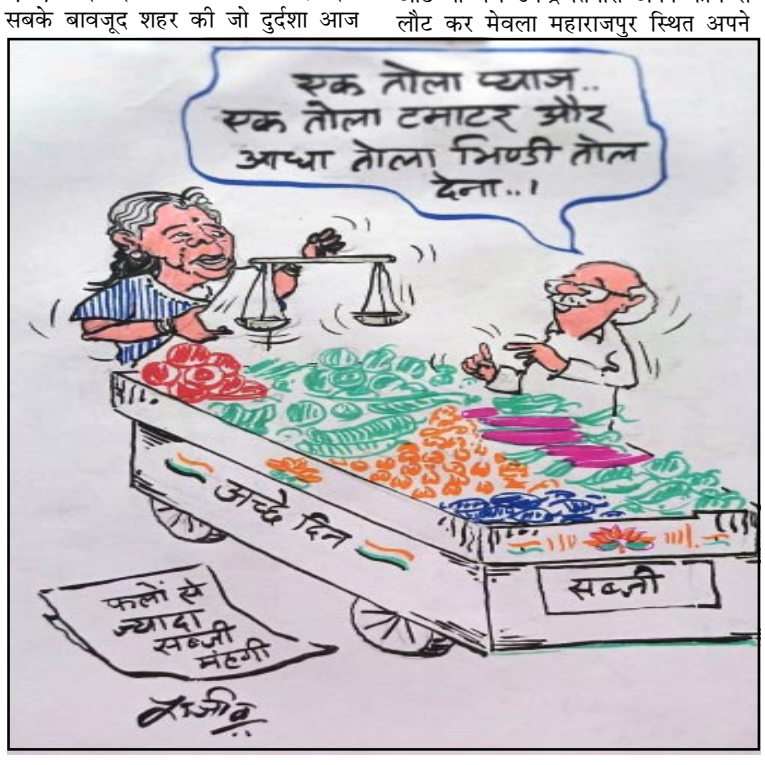

सेक्टर 21 सी स्थित पत्थर मार्केट के निकट अभी हाल ही में बनी आधी-अधूरी आरएमसी (सिमेंट) रोड इस कदर फट चुकी है कि अच्छे-खासे गड्ढे बन गये। आस-पास के लोगों का कहना है कि हर बारिश में यहां डेढ से दो फुट पानी खड़ा हो जाता है। जाहिर है कि रात के अंधेरे में वहां से गुजरने वाला दुपहिया चालक मौत के इन गड्ढों को नहीं देख पाता। इन गड्ढों में फंस कर तिवारी गिरा और बूरी तरह से घायल हो गया। उनके घर न पहुंचने के चलते, परेशान घरवालों ने उन्हें फोन लगाया जिसका कोई जवाब न मिला। प्रात: जब परिजन ढूंढते हुए घटनास्थल तक पहुंचे तो वहां पुलिस मौजूद थी। दरअसल तिवारी की बाइक डिग्गी में उनके फोन की घंटी बज रही थी जिसे पुलिस वालों ने निकाल कर घर वालों को सूचित किया था।

सरकारी महकमों की लापरवाही एवं चोर बाजारी के चलते पानी व अंधेरे में डूबी हुई टूटी सड़क के कारण हुई मौत का विरोध होना स्वाभाविक था। आम आदमी पार्टी के संतोष यादव व बाबा राम केवल के साथ मृतक के परिजन व अन्य लोग शव लेकर एमसीएफ दफ्तर पहुंचे। वहां पुलिस के भारी दल-बल की मौजूदगी में निगम अधिकारी गौरव अंतिल ने उन्हें अपने तरीके से समझाते हुए फ़र्जी सा आश्वासन दिया कि वे मृतक के परिजनों के लिये यथासम्भव प्रयास करेंगे। यानी कोई ठोस आश्वासन नहीं। उधर प्रदर्शनकारियों की पहली मांग थी कि निगम अधिकारियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया जाय तथा मृतक परिवार को उचित मुआवजा दिया जाय।

प्रदर्शनकारी जब नहीं माने तो अधिकारियों ने उन पर बल प्रयोग करते हुए शव पर राजनीति करने वाला बताया तथा हल्का लाठी चार्ज करके संतोष यादव तथा बाबा राम केवल को गिरफ्तार कर पुलिस चौकी एनएच तीन में बैठा दिया। देर शाम उन्हें जमानत पर छोड़ भी दिया। सवाल यह पैदा होता है कि इस शहर में आये दिन कोई न कोई सीवर में डूब कर घायल हो रहा है या मर रहा है, कोई आवारा पशुओं की टक्कर से मर रहा है तो कोई सड़क पर चलते हुए बिजली के करंट से मर रहा है, उसके बावजूद किसी भी अधिकारी के खिलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं होती। इसके विरोध में जनता प्रदर्शन करती है तो उसे 'शव पर राजनीति' बताया जाता है।

बीते शनिवार को ही गुड़गांव स्थित एक बिल्डर के कारिंदों द्वारा बनाये गये गड्ढे में 6 बच्चों के डूब मरने के जुर्म में कम्पनी के चेयरमैन के विरुद्ध मुकदमा दर्ज हो गया। इसी तरह कुछ वर्ष पूर्व गुड़गांव के ही एक स्कूल में बच्चे की हत्या के अपराध में बंबई में बैठे उसके चेयरमैन को दोषी बना दिया गया था। ऐसे में यही कानून मुख्यमंत्री खट्टर पर क्यों नहीं लागू होना चाहिये?

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421